



?????

18 Jan 2009

12:00 AM

Kaithal

Model: All-Dosha-Report

Order No: 120978201

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 17-18/01/2009  
दिन \_\_\_\_\_: शनि-रविवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 41:39:33 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Kaithal  
राज्य \_\_\_\_\_: Haryana  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 29:47:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 76:29:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:24:04 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 23:35:56 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:10:06 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 07:25:09 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:20:10 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:48:30 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:28:20 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शिशिर  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 03:47:58 मकर  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 24:33:27 कन्या

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: कन्या - बुध  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: कन्या - बुध  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: चित्रा - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: मंगल  
योग \_\_\_\_\_: धृति  
करण \_\_\_\_\_: बालव  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: व्याघ्र  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: वैश्य  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मूषक  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: भूमि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: पो-पौरुष  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: स्वर्ण - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मकर

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1930	पौष	28
पंजाबी	संवत : 2065	माघ	6
बंगाली	सन् : 1415	माघ	4
तमिल	संवत : 2065	थई	5
केरल	कोल्लम : 1184	मकरम	5
नेपाली	संवत : 2065	माघ	5
चैत्रादि	संवत : 2065	माघ	कृष्ण 8
कार्तिकादि	संवत : 2065	पौष	कृष्ण 8

### पंचांग

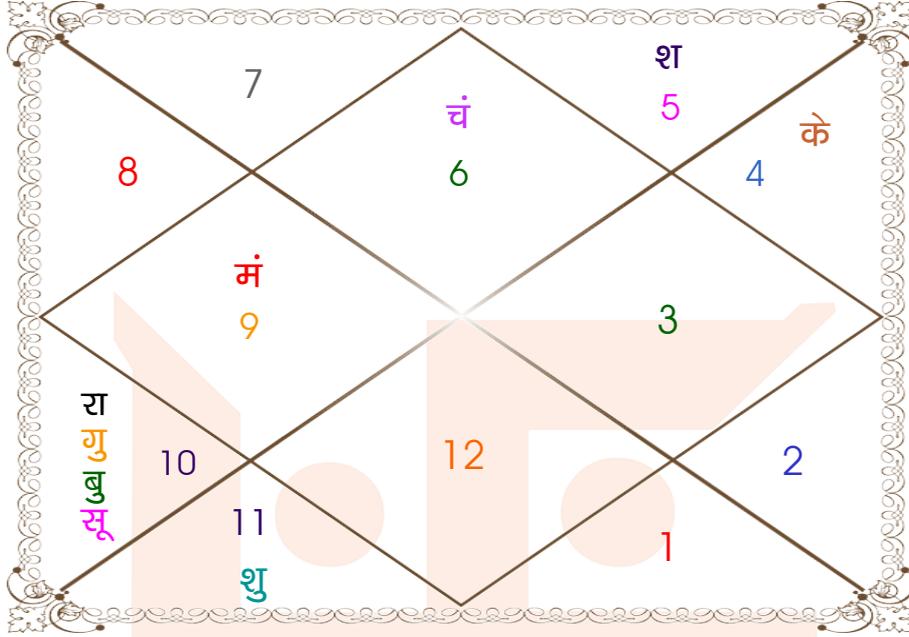
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 19:50:14  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 8  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : हस्त  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:46:04 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : चित्रा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : सुकर्मा  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 23:29:51 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : धृति  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:36:17 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बालव  
भयात \_\_\_\_\_ : 30:34:52  
भभोग \_\_\_\_\_ : 63:19:28  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : मंगल 3 वर्ष 7 मा 4 दि

### घात चक्र

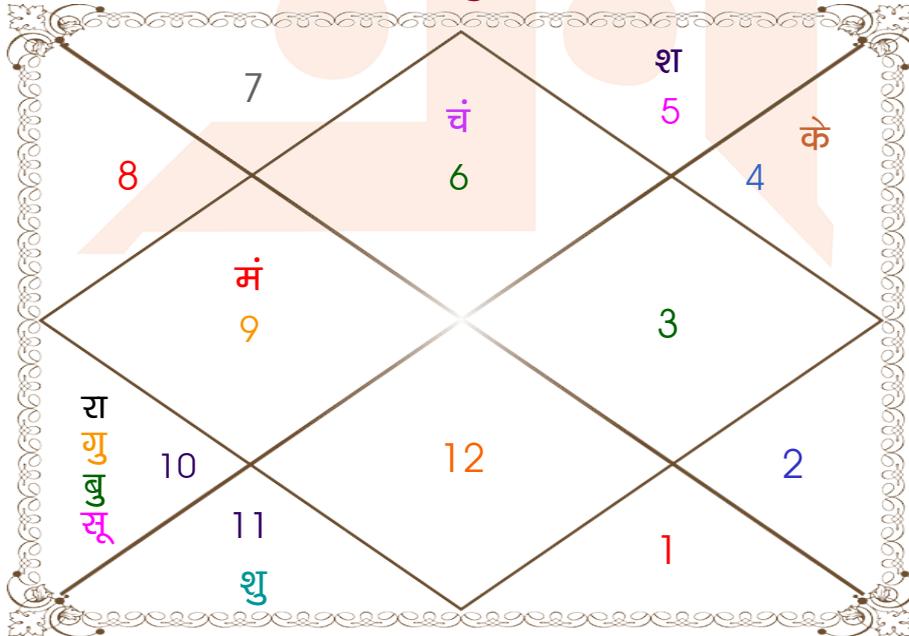
मास \_\_\_\_\_ : भाद्रपद  
तिथि \_\_\_\_\_ : 5-10-15  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : श्रवण  
योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मार्जार  
लग्न \_\_\_\_\_ : मीन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मेष  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मिथुन  
मंगल \_\_\_\_\_ : वृष  
बुध \_\_\_\_\_ : मीन  
गुरु \_\_\_\_\_ : मिथुन  
शुक्र \_\_\_\_\_ : कर्क  
शनि \_\_\_\_\_ : मीन  
राहु \_\_\_\_\_ : सिंह

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

शु			के
रा बु सू गु			श
मं			चं ल

## लग्न कुंडली

			शु
के			बु रा सू गु
श			मं
	ल चं		

विंशोत्तरी  
मंगल 3वर्ष 7मा 4दि  
मंगल

18/01/2009

24/08/2125

मंगल	22/08/2012
राहु	23/08/2030
गुरु	23/08/2046
शनि	23/08/2065
बुध	23/08/2082
केतु	23/08/2089
शुक्र	24/08/2109
सूर्य	24/08/2115
चन्द्र	24/08/2125

योगिनी

मंगला 0वर्ष 6मा 4दि

उल्का

25/07/2023

24/07/2029

उल्का	24/07/2024
सिद्धा	23/09/2025
संकटा	23/01/2027
मंगला	25/03/2027
पिंगला	25/07/2027
धान्या	23/01/2028
भ्रामरी	23/09/2028
भद्रिका	24/07/2029



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 09:44:46	कन्या 24:33:27
2	तुला 09:44:46	तुला 24:56:05
3	वृश्चिक 10:07:24	वृश्चिक 25:18:43
4	धनु 10:30:02	धनु 25:41:20
5	मकर 10:30:02	मकर 25:18:43
6	कुम्भ 10:07:24	कुम्भ 24:56:05
7	मीन 09:44:46	मीन 24:33:27
8	मेष 09:44:46	मेष 24:56:05
9	वृष 10:07:24	वृष 25:18:43
10	मिथुन 10:30:02	मिथुन 25:41:20
11	कर्क 10:30:02	कर्क 25:18:43
12	सिंह 10:07:24	सिंह 24:56:05

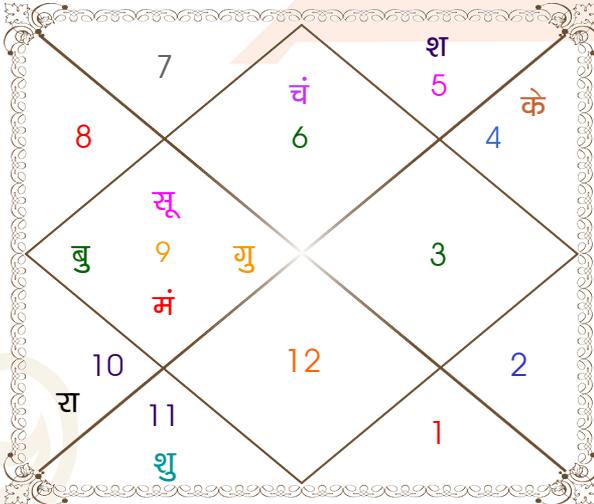
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	24:33:27
2	तुला	23:04:54
3	वृश्चिक	23:43:01
4	धनु	25:41:20
5	मकर	27:43:22
6	कुम्भ	27:52:32
7	मीन	24:33:27
8	मेष	23:04:54
9	वृष	23:43:01
10	मिथुन	25:41:20
11	कर्क	27:43:22
12	सिंह	27:52:32

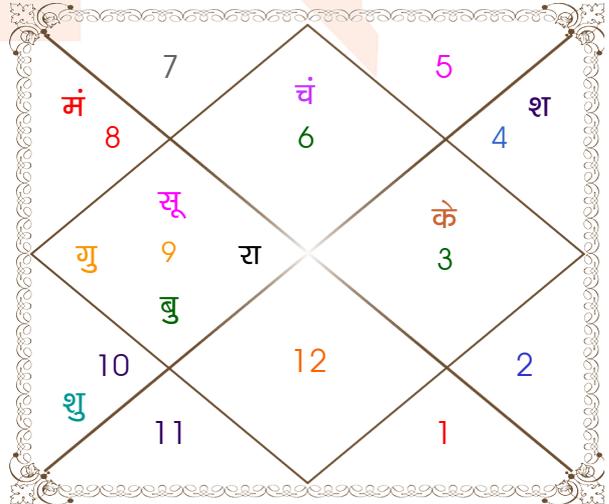
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



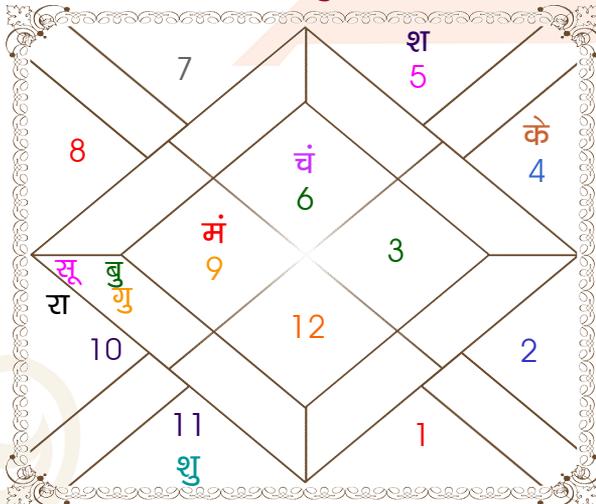
## कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत	खल	सभा	1.86	20 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	बाल	मुदित	शयन	1.66	58 %
मंगल	भातृ	भातृ	वृद्ध	विकल	शयन	0.00	40 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	वृद्ध	विकल	गमन	0.00	35 %
गुरु	ज्ञाति	धन	वृद्ध	विकल	प्रकाश	0.00	11 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	वृद्ध	मुदित	सभा	6.40	40 %
शनि	अमात्य	आयु	मृत	खल	शयन	1.42	17 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	मुदित	गमन	0.00	67 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	मुदित	शयन	0.00	67 %
कुल						11.33	

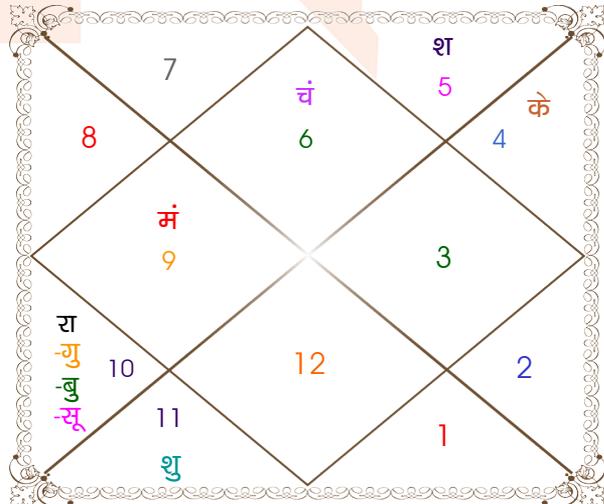
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

### चलित कुंडली



### लग्न-चलित



## विंशोत्तरी दशा

### भोग्य दशा काल : मंगल 3 वर्ष 7 मास 4 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
18/01/2009	22/08/2012	23/08/2030	23/08/2046	23/08/2065
22/08/2012	23/08/2030	23/08/2046	23/08/2065	23/08/2082
00/00/0000	राहु 06/05/2015	गुरु 10/10/2032	शनि 26/08/2049	बुध 19/01/2068
00/00/0000	गुरु 28/09/2017	शनि 23/04/2035	बुध 05/05/2052	केतु 16/01/2069
18/01/2009	शनि 04/08/2020	बुध 29/07/2037	केतु 14/06/2053	शुक्र 16/11/2071
शनि 21/02/2009	बुध 22/02/2023	केतु 05/07/2038	शुक्र 13/08/2056	सूर्य 22/09/2072
बुध 18/02/2010	केतु 11/03/2024	शुक्र 05/03/2041	सूर्य 26/07/2057	चंद्र 21/02/2074
केतु 17/07/2010	शुक्र 12/03/2027	सूर्य 22/12/2041	चंद्र 25/02/2059	मंगल 19/02/2075
शुक्र 17/09/2011	सूर्य 04/02/2028	चंद्र 23/04/2043	मंगल 04/04/2060	राहु 07/09/2077
सूर्य 22/01/2012	चंद्र 04/08/2029	मंगल 29/03/2044	राहु 09/02/2063	गुरु 14/12/2079
चंद्र 22/08/2012	मंगल 23/08/2030	राहु 23/08/2046	गुरु 23/08/2065	शनि 23/08/2082

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
23/08/2082	23/08/2089	24/08/2109	24/08/2115	24/08/2125
23/08/2089	24/08/2109	24/08/2115	24/08/2125	00/00/0000
केतु 19/01/2083	शुक्र 22/12/2092	सूर्य 11/12/2109	चंद्र 24/06/2116	मंगल 20/01/2126
शुक्र 20/03/2084	सूर्य 22/12/2093	चंद्र 12/06/2110	मंगल 23/01/2117	राहु 07/02/2127
सूर्य 26/07/2084	चंद्र 23/08/2095	मंगल 18/10/2110	राहु 24/07/2118	गुरु 14/01/2128
चंद्र 24/02/2085	मंगल 22/10/2096	राहु 11/09/2111	गुरु 23/11/2119	शनि 19/01/2129
मंगल 23/07/2085	राहु 23/10/2099	गुरु 30/06/2112	शनि 24/06/2121	00/00/0000
राहु 11/08/2086	गुरु 24/06/2102	शनि 12/06/2113	बुध 23/11/2122	00/00/0000
गुरु 18/07/2087	शनि 24/08/2105	बुध 18/04/2114	केतु 24/06/2123	00/00/0000
शनि 25/08/2088	बुध 24/06/2108	केतु 24/08/2114	शुक्र 22/02/2125	00/00/0000
बुध 23/08/2089	केतु 24/08/2109	शुक्र 24/08/2115	सूर्य 24/08/2125	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 3 वर्ष 7 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>राहु - शुक्र</b> 11/03/2024 12/03/2027	<b>राहु - सूर्य</b> 12/03/2027 04/02/2028	<b>राहु - चंद्र</b> 04/02/2028 04/08/2029	<b>राहु - मंगल</b> 04/08/2029 23/08/2030	<b>गुरु - गुरु</b> 23/08/2030 10/10/2032
शुक्र 10/09/2024 सूर्य 03/11/2024 चंद्र 03/02/2025 मंगल 08/04/2025 राहु 19/09/2025 गुरु 12/02/2026 शनि 05/08/2026 बुध 07/01/2027 केतु 12/03/2027	सूर्य 28/03/2027 चंद्र 25/04/2027 मंगल 14/05/2027 राहु 02/07/2027 गुरु 15/08/2027 शनि 06/10/2027 बुध 22/11/2027 केतु 11/12/2027 शुक्र 04/02/2028	चंद्र 20/03/2028 मंगल 21/04/2028 राहु 12/07/2028 गुरु 23/09/2028 शनि 19/12/2028 बुध 07/03/2029 केतु 08/04/2029 शुक्र 08/07/2029 सूर्य 04/08/2029	मंगल 27/08/2029 राहु 23/10/2029 गुरु 13/12/2029 शनि 12/02/2030 बुध 08/04/2030 केतु 30/04/2030 शुक्र 03/07/2030 सूर्य 22/07/2030 चंद्र 23/08/2030	गुरु 05/12/2030 शनि 07/04/2031 बुध 27/07/2031 केतु 10/09/2031 शुक्र 18/01/2032 सूर्य 26/02/2032 चंद्र 01/05/2032 मंगल 15/06/2032 राहु 10/10/2032
<b>गुरु - शनि</b> 10/10/2032 23/04/2035	<b>गुरु - बुध</b> 23/04/2035 29/07/2037	<b>गुरु - केतु</b> 29/07/2037 05/07/2038	<b>गुरु - शुक्र</b> 05/07/2038 05/03/2041	<b>गुरु - सूर्य</b> 05/03/2041 22/12/2041
शनि 06/03/2033 बुध 15/07/2033 केतु 07/09/2033 शुक्र 08/02/2034 सूर्य 26/03/2034 चंद्र 11/06/2034 मंगल 04/08/2034 राहु 21/12/2034 गुरु 23/04/2035	बुध 19/08/2035 केतु 06/10/2035 शुक्र 21/02/2036 सूर्य 02/04/2036 चंद्र 10/06/2036 मंगल 29/07/2036 राहु 30/11/2036 गुरु 20/03/2037 शनि 29/07/2037	केतु 18/08/2037 शुक्र 14/10/2037 सूर्य 31/10/2037 चंद्र 28/11/2037 मंगल 18/12/2037 राहु 08/02/2038 गुरु 25/03/2038 शनि 18/05/2038 बुध 05/07/2038	शुक्र 15/12/2038 सूर्य 01/02/2039 चंद्र 23/04/2039 मंगल 19/06/2039 राहु 12/11/2039 गुरु 21/03/2040 शनि 22/08/2040 बुध 07/01/2041 केतु 05/03/2041	सूर्य 20/03/2041 चंद्र 13/04/2041 मंगल 30/04/2041 राहु 13/06/2041 गुरु 22/07/2041 शनि 06/09/2041 बुध 18/10/2041 केतु 04/11/2041 शुक्र 22/12/2041
<b>गुरु - चंद्र</b> 22/12/2041 23/04/2043	<b>गुरु - मंगल</b> 23/04/2043 29/03/2044	<b>गुरु - राहु</b> 29/03/2044 23/08/2046	<b>शनि - शनि</b> 23/08/2046 26/08/2049	<b>शनि - बुध</b> 26/08/2049 05/05/2052
चंद्र 01/02/2042 मंगल 01/03/2042 राहु 13/05/2042 गुरु 17/07/2042 शनि 03/10/2042 बुध 11/12/2042 केतु 08/01/2043 शुक्र 30/03/2043 सूर्य 23/04/2043	मंगल 13/05/2043 राहु 03/07/2043 गुरु 18/08/2043 शनि 11/10/2043 बुध 28/11/2043 केतु 18/12/2043 शुक्र 13/02/2044 सूर्य 01/03/2044 चंद्र 29/03/2044	राहु 08/08/2044 गुरु 03/12/2044 शनि 20/04/2045 बुध 23/08/2045 केतु 13/10/2045 शुक्र 08/03/2046 सूर्य 21/04/2046 चंद्र 03/07/2046 मंगल 23/08/2046	शनि 13/02/2047 बुध 19/07/2047 केतु 21/09/2047 शुक्र 22/03/2048 सूर्य 16/05/2048 चंद्र 15/08/2048 मंगल 18/10/2048 राहु 01/04/2049 गुरु 26/08/2049	बुध 12/01/2050 केतु 10/03/2050 शुक्र 21/08/2050 सूर्य 09/10/2050 चंद्र 30/12/2050 मंगल 26/02/2051 राहु 23/07/2051 गुरु 01/12/2051 शनि 05/05/2052

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - केतु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - चंद्र	शनि - मंगल
05/05/2052	14/06/2053	13/08/2056	26/07/2057	25/02/2059
14/06/2053	13/08/2056	26/07/2057	25/02/2059	04/04/2060
केतु 28/05/2052	शुक्र 23/12/2053	सूर्य 31/08/2056	चंद्र 12/09/2057	मंगल 20/03/2059
शुक्र 04/08/2052	सूर्य 19/02/2054	चंद्र 29/09/2056	मंगल 16/10/2057	राहु 20/05/2059
सूर्य 24/08/2052	चंद्र 27/05/2054	मंगल 19/10/2056	राहु 11/01/2058	गुरु 13/07/2059
चंद्र 27/09/2052	मंगल 02/08/2054	राहु 10/12/2056	गुरु 29/03/2058	शनि 15/09/2059
मंगल 21/10/2052	राहु 23/01/2055	गुरु 25/01/2057	शनि 29/06/2058	बुध 11/11/2059
राहु 20/12/2052	गुरु 26/06/2055	शनि 21/03/2057	बुध 19/09/2058	केतु 05/12/2059
गुरु 12/02/2053	शनि 26/12/2055	बुध 09/05/2057	केतु 22/10/2058	शुक्र 10/02/2060
शनि 17/04/2053	बुध 07/06/2056	केतु 29/05/2057	शुक्र 27/01/2059	सूर्य 02/03/2060
बुध 14/06/2053	केतु 13/08/2056	शुक्र 26/07/2057	सूर्य 25/02/2059	चंद्र 04/04/2060
शनि - राहु	शनि - गुरु	बुध - बुध	बुध - केतु	बुध - शुक्र
04/04/2060	09/02/2063	23/08/2065	19/01/2068	16/01/2069
09/02/2063	23/08/2065	19/01/2068	16/01/2069	16/11/2071
राहु 08/09/2060	गुरु 13/06/2063	बुध 25/12/2065	केतु 09/02/2068	शुक्र 07/07/2069
गुरु 24/01/2061	शनि 06/11/2063	केतु 15/02/2066	शुक्र 10/04/2068	सूर्य 28/08/2069
शनि 08/07/2061	बुध 16/03/2064	शुक्र 11/07/2066	सूर्य 28/04/2068	चंद्र 22/11/2069
बुध 03/12/2061	केतु 09/05/2064	सूर्य 24/08/2066	चंद्र 28/05/2068	मंगल 21/01/2070
केतु 01/02/2062	शुक्र 11/10/2064	चंद्र 05/11/2066	मंगल 18/06/2068	राहु 26/06/2070
शुक्र 25/07/2062	सूर्य 26/11/2064	मंगल 27/12/2066	राहु 12/08/2068	गुरु 11/11/2070
सूर्य 15/09/2062	चंद्र 11/02/2065	राहु 08/05/2067	गुरु 29/09/2068	शनि 23/04/2071
चंद्र 11/12/2062	मंगल 06/04/2065	गुरु 02/09/2067	शनि 25/11/2068	बुध 17/09/2071
मंगल 09/02/2063	राहु 23/08/2065	शनि 19/01/2068	बुध 16/01/2069	केतु 16/11/2071
बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल	बुध - राहु	बुध - गुरु
16/11/2071	22/09/2072	21/02/2074	19/02/2075	07/09/2077
22/09/2072	21/02/2074	19/02/2075	07/09/2077	14/12/2079
सूर्य 02/12/2071	चंद्र 04/11/2072	मंगल 14/03/2074	राहु 08/07/2075	गुरु 26/12/2077
चंद्र 28/12/2071	मंगल 04/12/2072	राहु 08/05/2074	गुरु 09/11/2075	शनि 06/05/2078
मंगल 15/01/2072	राहु 20/02/2073	गुरु 25/06/2074	शनि 05/04/2076	बुध 01/09/2078
राहु 01/03/2072	गुरु 30/04/2073	शनि 21/08/2074	बुध 15/08/2076	केतु 19/10/2078
गुरु 12/04/2072	शनि 21/07/2073	बुध 12/10/2074	केतु 08/10/2076	शुक्र 06/03/2079
शनि 31/05/2072	बुध 02/10/2073	केतु 02/11/2074	शुक्र 12/03/2077	सूर्य 16/04/2079
बुध 14/07/2072	केतु 01/11/2073	शुक्र 01/01/2075	सूर्य 28/04/2077	चंद्र 24/06/2079
केतु 01/08/2072	शुक्र 26/01/2074	सूर्य 19/01/2075	चंद्र 15/07/2077	मंगल 12/08/2079
शुक्र 22/09/2072	सूर्य 21/02/2074	चंद्र 19/02/2075	मंगल 07/09/2077	राहु 14/12/2079

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

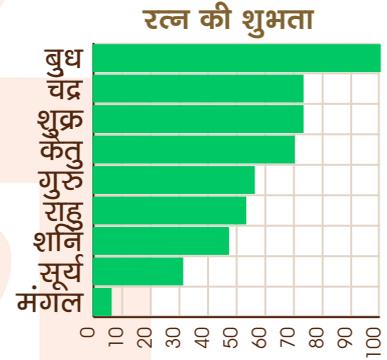
मूलांक	9
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	73%	स्वास्थ्य, धनार्जन
हीरा	शुक्र	73%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, धन
लहसुनिया	केतु	70%	धनार्जन, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	56%	सन्तति सुख, सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	53%	सन्तति सुख, कम खर्च
नीलम	शनि	47%	व्यय, सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	31%	सन्तति कष्ट, व्यय
मूंगा	मंगल	6%	ग्रह कलेश, दुर्घटना, पराक्रम हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	22/08/2012	44%	80%	31%	100%	62%	73%	47%	31%	77%
राहु	23/08/2030	6%	61%	0%	100%	56%	80%	55%	66%	58%
गुरु	23/08/2046	44%	80%	19%	100%	69%	61%	47%	53%	70%
शनि	23/08/2065	6%	61%	0%	100%	56%	80%	61%	59%	58%
बुध	23/08/2082	44%	61%	6%	100%	56%	80%	47%	53%	70%
केतु	23/08/2089	6%	61%	19%	100%	56%	80%	22%	31%	83%
शुक्र	24/08/2109	6%	61%	6%	100%	56%	86%	55%	59%	77%
सूर्य	24/08/2115	53%	80%	19%	100%	62%	61%	22%	31%	58%
चंद्र	24/08/2125	44%	86%	6%	100%	56%	73%	47%	31%	58%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/01/2009-10/09/2009	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यय
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

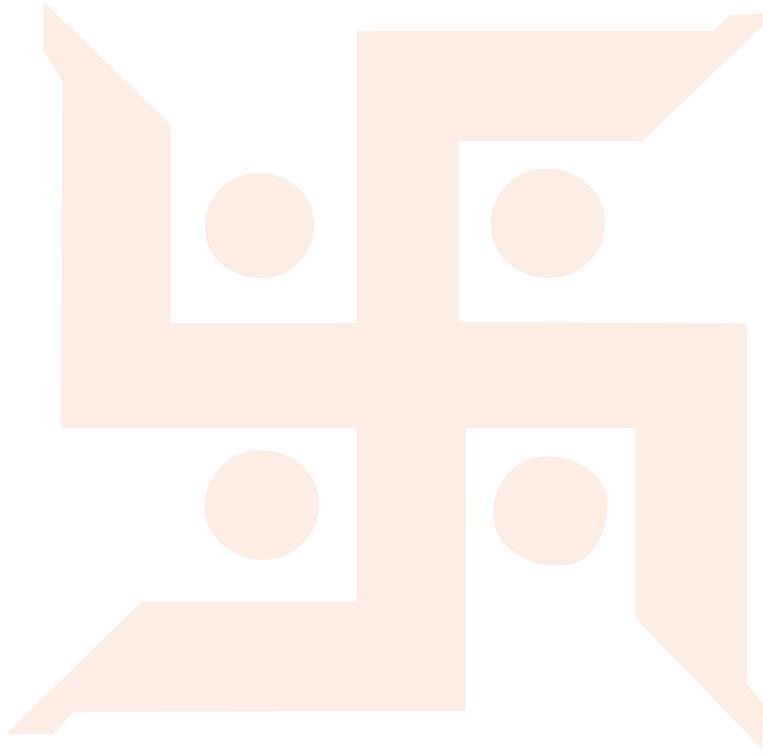
\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में पद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को थोड़ा विलम्ब से सन्तान प्राप्त होती है या फिर उसके होने में आंशिक रूप में व्यवधान उपस्थित होता है और जातक को पुत्र सन्तान की प्रायः चिन्ता बनी रहती है। ऐसे जातक को सन्तान सुख अल्प मात्रा में ही मिलता है और अक्सर सन्तान से दूर रहता है। जातक को वंश वृद्धि के लिए थोड़ी बहुत चिन्ता बनी रहती है। विद्याध्ययन में आंशिक रूप से रूकावट आती है। पर कालान्तर में व्यवधान स्वतः समाप्त हो जाता है।

इस योग के कारण जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी किसी भी समय कष्टमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से जातक को अपयश मिलता है। घर की सुख-शान्ति में थोड़ा अभाव रहता है और जातक के मित्रगण स्वार्थी होते हैं। वे समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जातक के शत्रु षड्यन्त्र रचते रहते हैं, जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। इस योग के प्रभाव से लाभ मार्ग में आंशिक रूप से बाधा, चिन्ता एवं कष्ट के कारण जीवन संघर्षमय बना रहता है।

इसके प्रभाव से जातक को गुप्त रोग व्याधि कभी घेर लेती है। जिसमें धन अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है और जातक द्वारा संग्रहीत सम्पत्ति को प्रायः दूसरे लोग हरण कर लेते हैं। जातक वृद्धावस्था को लेकर थोड़ा बहुत चिन्तित रहता है। कभी जातक के मन में सन्यास ग्रहण करने की भावना जागृत हो जाती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक को राजनीति में बहुत सफलता मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- सूर्य पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ट व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते हैं। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता है।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्टेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता है, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता है।

शुक्र की स्थिति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता है।

आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रुचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक स्वाभाविक रूप से अध्ययनशील होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में उनकी रुचि रहती है ये गुणवान व्यक्ति होते हैं परन्तु स्त्रियों के प्रति इनका अधिक आकर्षण होता है। ये जातक सौभाग्यशाली होते हैं तथा अधिकांश सांसारिक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प परिश्रम से ही इच्छित सफलता प्राप्त करते हैं। इनकी बुद्धि अत्यंत ही तीव्र होती है तथा गूढ़ से गूढ़ विषयों या गंभीर समस्याओं का समाधान करने में समर्थ रहते हैं तथा जीवन में सुख संसाधनों तथा धनैश्वर्य से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करते हैं। राजनीति में इनकी रुचि अल्प रहती है परन्तु राजनेताओं के सलाहकार या सचिव के रूप में राजकार्यों में इनका पूर्ण हस्तक्षेप रहता है। इसके अतिरिक्त भावुकता के स्थान पर ये बुद्धि से कार्य लेते हैं। अतः जीवन में सर्वदा उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। अध्ययन के प्रति आप रुचिशील रहेंगे तथा लेखन मनोविज्ञान या आलोचना के क्षेत्र में सफलता अर्जित करेंगे आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी अतः विषम समस्याओं या कठिन से कठिन विषयों को समझने तथा उनका विवेचन करने में समर्थ रहेंगे अतः आप सरकारी क्षेत्र में प्रशासनिक रूप से अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक होगा। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मानसिक प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि बनी रहेगी। शारीरिक बल की आप में प्रचुरता रहेगी तथा अपने पराक्रम परिश्रम एवं योग्यता से वांछित सफलताएं अर्जित करके उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे। कार्य क्षेत्र में भी आप एक योग्य एवं सम्माननीय व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। धनैश्वर्य एवं भौतिक सुखों की आपको तीव्र लालसा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनको प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहेंगे।

आपका स्वभाव दानशीलता के भाव से युक्त रहेगा तथा अवसरानुकूल आप अन्य जनों के परोपकार के लिए अपना तन मन धन से सहयोग प्रदान करने में तत्पर होंगे। आप कला, लेखन एवं साहित्य के प्रति रुचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में आपको सफलता की भी प्राप्ति हो सकती है।

धर्म के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को आप नियमपूर्वक समय समय पर सम्पन्न करते रहेंगे तथा इन कार्यों से आपको आत्मिक शांति प्राप्त होगी। मित्रों के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको जीवन में यथोचित सुख एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। माता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा में तत्पर रहेंगे।

इस प्रकार आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता तथा पराक्रम से सुख संसाधनों तथा धनैश्वर्य अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे।

## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म काल में द्वितीय भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है । अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा समस्त पारिवारिक जन परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मृदु एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। रहेंगे। प्रौढ़वास्था में आपको अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त हो सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक एवं अन्य शुभ मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही अन्य उत्सवों का आयोजन करने में भी आपकी रुचि रहेगी। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से भी आप वांछित धनऐश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे। पारिवारिक जनों को प्रसन्नता तथा सुविधा प्रदान करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक आदरणीय पुरुष होंगे तथा सौभाग्य बल से आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा मंगल भी मित्र राशि में होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इनके प्रभाव से जीवन में आप समस्त वांछित सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप स्वयं भी एक पराक्रमी एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे अतः अपने इन गुणों से भी भौतिक सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगे। इससे आपको ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समाज में भी उच्चस्तर बना रहेगा एवं वांछित सम्मान की भी प्राप्ति होगी।

आपको जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा इसकी आपके पास बहुलता होगी। भाईयों के सहयोग एवं प्रभाव से भी आपको धन-सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा चल या अचल सम्पत्ति बनाने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से अधिक लाभ होगा लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको दूर ही रहना चाहिये।

आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा इसमें सुखपूर्वक निवास करेंगे। आपका आवास आधुनिक सुख सुविधाओं से पूर्ण होगा तथा भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से भी सुसज्जित होगा। इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप तत्पर रहेंगे। आपका आवास किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पडोसी भी शिक्षित होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था में ही आप वाहन प्राप्त करके सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित तथा भौतिकवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपने व्यवहार कुशलता से पारिवारिक सदस्यों पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगी। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तथा उन्हें यथोचित मान-सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका विशिष्ट वात्सल्य भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक या नैतिक सहयोग मिलता रहेगा। लेकिन आप दोनों के मध्य सैद्धांतिक मतभेदों की प्रबलता होगी फलतः यदा कदा संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

आप एक परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अध्ययन के प्रति भी रुचि रहेगी। अतः प्रारंभ से ही आपको परीक्षाओं में अच्छे अंकों की प्राप्ति होगी परंतु स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में कोई पाठ्यक्रम करें तो उससे आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी जिससे आप में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा उज्ज्वल भविष्य निर्माण के लिए तत्पर होंगे।

नैसर्गिक पापी ग्रह मंगल की चतुर्थ भाव में स्थिति के कारण युवावस्था के बाद आप रक्त चाप या हृदय संबंधी कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं। अतः यदि आप बचपन से ही खान-पान पर नियंत्रण रखें तथा ऐसी पदार्थों का उपयोग न करें जिससे रक्त चाप या हृदय प्रभावित होता हो तो उपरोक्त परेशानियों में न्यूनता आएगी तथा सुखपूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकरराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा राहु भी नीचराशि में स्थित होकर पंचमभाव में ही बैठा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी कार्यों में बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म ग्रन्थों में आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक, वैज्ञानिक विषयों, साहित्य एवं इतिहास जैसे प्राचीन विषयों में भी आपकी रुचि होगी तथा रुचि पूर्वक इसका अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगे। पाश्चात्य साहित्य में भी आप रुचिशील होंगे तथा इसका आपको काफी ज्ञान होगा जिससे एक विद्वान के रूप में समाज में अपनी छवि स्थापित करने में समर्थ होंगे।

राहु की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा प्रेम को मनोरंजन एवं सुख का साधन अधिक समझेंगे। यदि आप प्रेम-प्रसंग में मर्यादा एवं नैतिकता का पालन न कर सके तो इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा सामाजिक सम्मान भी प्रभावित हो सकता है। अतः आपको ऐसी स्थिति की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

पंचमभाव में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपको पुत्र संतति की प्राप्ति में विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु पुत्र संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। तथा कन्या संतति अधिक हो सकती है। आपकी सन्तति पराक्रमी, तेजस्वी एवं व्यवहारिक प्रवृत्ति की होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति तथा सफलताएं अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में यद्यपि सम्मान एवं श्रद्धा का भाव होगा तथापि उनकी आज्ञापालन की वे उपेक्षा करेंगे। वे सांसारिक कार्यों के महत्व में भी माता पिता का सहयोग एवं सलाह कम ही लेंगे। लेकिन आप को उनकी इस प्रवृत्ति से परेशान नहीं होना चाहिए तथा उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्यों को सम्पन्न करने देने चाहिए। इससे आपसी संबंधों में मधुरता होगी तथा विश्वास का भाव भी बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं करनी चाहिए तथा अपने लिए प्रचुर मात्रा में धन संचित करके रखना चाहिए। जिससे अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना नहीं करना पड़े।

शिक्षा के क्षेत्र में आपकी संतति की उन्नति सन्तोष प्रद होगी तथा परिश्रम से ही वे न्यूनाधिक मात्रा में उन्नति का प्रदर्शन करेंगे यद्यपि आप अपनी ओर से उनके लिए शिक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगे। उनकी प्रवृत्ति व्यावहारिक होगी तथा जीवन में उचित शिक्षा अर्जित करके आपकी चिन्ताओं में कमी करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य लोगो से भी उनका समय-समय पर वाद-विवाद होगा जिससे अनावश्यक परेशानी हो सकती है परंतु आप अपने सद्व्यवहार से स्थिति को सम्भालने में समर्थ होंगे। इस प्रकार बच्चों का आपको सामान्य सुख प्राप्त होगा।

## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रकृति वाला आस्तिक एवं धनवान होता है। वह स्वभाव से सौम्य , कर्तव्य परायण एवं सांसारिक कार्यों में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील होंगी तथा स्वभाव से सौम्य रहेगी। सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में वह बुद्धिमता का प्रदर्शन करेगी जिससे यथा समय कार्य पूर्ण होंगे। साथ ही कर्तव्य परायणता के भाव से भी युक्त होंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा कद भी सामान्य रहेगा साथ ही शारीरिक संरचना उनकी आकर्षक होगी तथा अंग प्रत्यंग भी सुडौल एवं पुष्ट होंगे जिससे उनके व्यक्तित्व एवं सौन्दर्य के आकर्षण में वृद्धि होगी। सौन्दर्य की वृद्धि के लिए समयानुसार आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग करेंगी। कला एवं संगीत में उनकी रूचि होगी तथा इस पर अपना समय भी व्यतीत करेंगी इसके अतिरिक्त भौतिक एवं संदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वच्छ से प्रेम विवाह भी सम्पन्न कर सकते हैं विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सम्मान की भावना रहेगी साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में सम्पन्न होगा तथा विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी बहुमूल्य उपकरण तथा वस्तुएं उपहार में मिलेंगी। सास ससुर के साथ में आपके औपचारिक संबंध बने रहेंगे तथा विवाह के बाद भी उनसे नैतिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव अनुकूल रहेगा तथा वह सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को प्रभावित तथा सन्तुष्ट रखने में समर्थ रहेंगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने के इच्छुक होंगे तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगे जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्यख्याता, अनुष्ठान कार्य, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासनिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा, ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी जिससे आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएं। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

### संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगी परन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

### यात्रा-तबादला

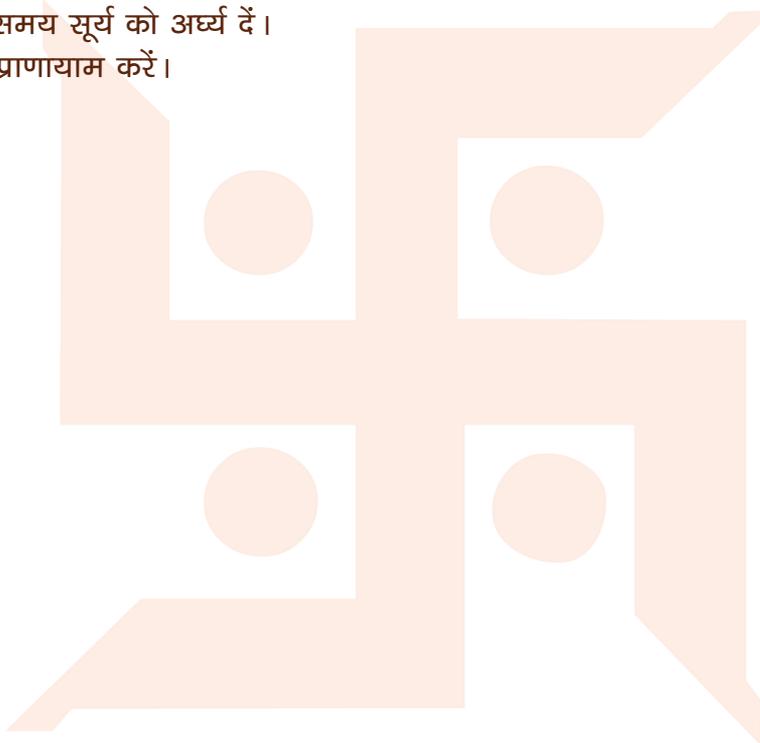
यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।



## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुँचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्न करेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वैदिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

### संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रुकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते हैं।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

### धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

### संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।



## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

### घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

### संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पत्ति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

### स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

### यात्रा-तबादला

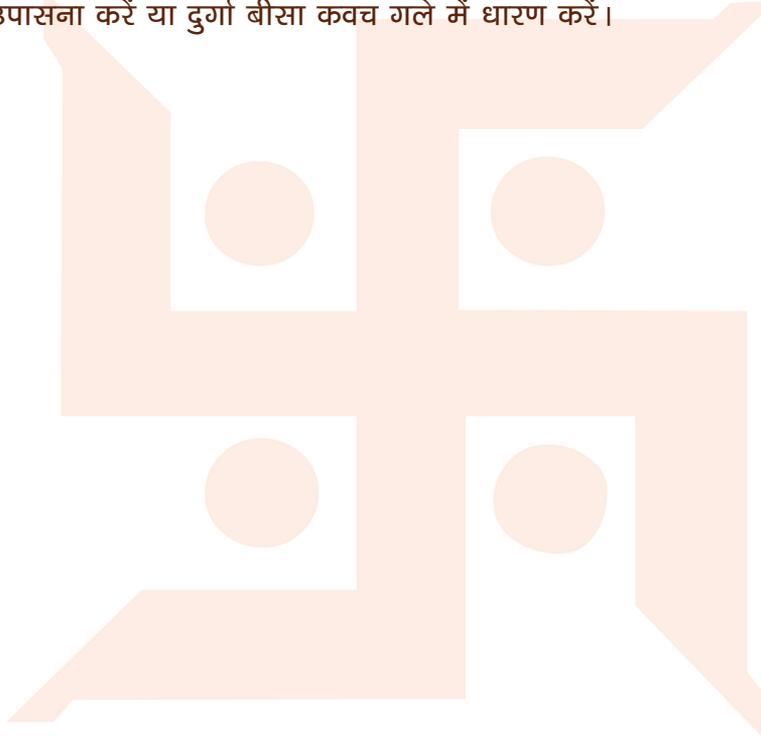
द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दूर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

### व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान हैं उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

### घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

### संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

### स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

### यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं

के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।